इकाई 2 समाज एवं राजनीति : चीन

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित बातें जान पाऐंगे :

- परम्परागत चीनी समाज के मूलभूत चरित्र और इसके मुख्य सामाजिक विभाजन क्या थे
- आधुनिक काल से पूर्व चीनी राज्य तथा उसकी प्रमुख राजनीतिक संस्थाओं की प्रकृति क्या थी और
- पश्चिमी साम्राज्यवाद के आगमन के समय चीन में विद्यमान सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति क्या थी।

2.1 प्रस्तावना

पारंपरिक चीन की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था जटिल थी। 20वीं सदी के मध्य में इसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। कुछ विकासात्मक परिवर्तनों के साथ, दो हजार वर्षों तक, एक विशाल क्षेत्र, जनसंख्या और व्यापक अनेकताओं को एक साथ रखते हुए यह अपने मूल रूप में चिरस्थायी बनी रही। इस दृष्टि से सच में यह मानव सभ्यता की एक अद्भुत देन थी। 19वीं सदी में चीन के अन्दर जो क्रान्तिकारी तरंगें पैदा हुई उन के सहित चीन की पश्चिम के प्रति प्रतिक्रिया की प्रकृति को समझने के लिये, उसके सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन की परम्परागत व्यवस्था की मजबूती को जानना अति महत्वपूर्ण है। 18वीं सदी एवं 19वीं सदी के प्रारम्भ में जिन कारणों ने इस व्यवस्था को अन्दर से कमजोर किया उनका विश्लेषण करना भी आवश्यक है। इस इकाई में इन पक्षों का विवरण किया गया है।

2.2 विकसित कृषि समाज

चीन सदैव से एक कृषि प्रधान समाज रहा है। उसकी जनसंख्या का अधिकतर भाग गाँव में रहता था और कृषि उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत था। समाज में मूलभूत विभाजन एक ओर बड़ी संख्या में मेहनतकश

किसानों तथा दूसरी ओर जमींदारों के बीच था। जमींदार स्वयं कृषि नहीं करते थे बल्कि उस आमदनी के आधार पर जीवन व्यतीत करते थे जो उनको किसानों के खेतों पर परिश्रम करने से प्राप्त होती थी। लेकिन इसका अर्थ नहीं है कि चीन का समाज एक सामान्य कृषि समाज था। प्राचीन समय से चीन की सामाजिक व्यवस्था काफी जटिल एवं विकसित थी। उदाहरण के लिए, एक हजार ई.पू. के प्रारम्भ से ही हम चीन में काफी बड़ी तादाद में सीमा की किलेबदियों, प्रमुख मार्गों , बड़े बाँध और सिंचाई योजनाओं आदि के निर्माण को देखते हैं। ऐसे कुछ निश्चित कारण थे जिन्होंने प्रारम्भिक प्राचीन काल से ही एक शक्तिशाली राज्य संगठन के विकास में योगदान किया। चीनी सभ्यता का विकास सदियों तक उन परिस्थितियों में हुआ जिन्होंने लोगों को व्यापक स्तर पर सामूहिक राजनीतिक एवं आर्थिक गतिविधियों को करने के लिए बाध्य किया। उदाहरण के लिये, चीन में अपने खानाबदोश पड़ोसियों के आक्रमणों से स्वयं को सुरक्षित रखने की आवश्यकता पड़ती और इसी के साथ बाढ़ो के विप्लव से सुरक्षित रखने पर उचित सिंचाई आदि को सुनिश्चित करने की भी आवश्यकता रहती थी।

विशेषकर 10वीं सदी से व्यापारिक कृषि एवं अन्तर-क्षेत्रीय व्यापार की प्रचुर वृद्धि ने भी चीनी समाज एवं राज्य के चरित्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया। अब शासक वर्ग अपनी सम्पत्ति को मात्र कृषि से ही नहीं बल्कि व्यापार से भी प्राप्त करने लगा। मुद्रा--अर्थव्यवस्था का विकास; सक्रिय नगरीय केन्द्रों में वृद्धि; साक्षरता का प्रसार (विशेष रूप से समाज के उच्च वर्गों में); समुद्र पार के विस्थापन के साथ-साथ अन्तर्क्षेत्रीय विस्थापन में वृद्धि आदि सभी ने संयुक्त रूप से चीनी समाज में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये। परिणाम स्वरूप यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति तक चीन विश्व के सबसे विकसित समाजों में से एक था।

2.2.1 सम्भ्रांत वर्ग

पारंपरिक चीन में तीन मुख्य सामाजिक वर्गों में जो प्रभुत्वशाली वर्ग था उसको "सम्भ्रांत वर्ग" कहा जाता है।

सम्भ्रांत वर्ग जमींदारों का वर्ग था और वह स्वयं अपने खेत पर कार्य नहीं करता था। वे अपनी आमदनी को मुख्य रूप से भूमि के लगान से प्राप्त करते थे, यद्यपि सम्पूर्ण आमदनी को नहीं। जो किसान उनकी भूमि पर कार्य करते वे उनको अक्सर अपनी फसल का आधा भू-राजस्व के रूप में अदा करते थे। लेकिन इस वर्ग को केवल भू-स्वामी के रूप में परिभाषित करना गलत होगा। ऐसा इसलिये है क्योंकि समय के साथ-साथ सम्भ्रांत वर्ग के बहुत से सदस्यों ने अनेकों व्यवसायों की शुरुआत की। उन्होंने अपनी शैक्षिक उपलब्धियों, सामाजिक सम्मान और जीवन शैली के द्वारा स्वयं को इस ढंग से भिन्न बनाया कि वे स्पष्ट रूप से आम आदमी से अलग रूप में देखे जाने लगे। सम्भ्रांत परिवारों के बेटे व्यापक रूप में कन्फ्यूशियस दर्शन में गहन शिक्षा की प्रक्रिया से होकर गुजरते थे। उनकी सफलता को उन मान्यता प्राप्त डिग्रियों के आधार पर आंका जाता था जिनको वे राज्य द्वारा आयोजित अनेक स्तरों की परीक्षाओं के द्वारा प्राप्त करते थे। परीक्षाओं में सबसे अधिक सफलता प्राप्त करने वाले प्रत्याशियों को शाही सरकार के पदाधिकारियों के रूप में नियुक्त किया जाता था। इसको परम्परागत चीनी समाज में सर्वोच्च उपलब्धि माना जाता था। सम्भ्रांत वर्ग के परिवार में एक या एक से अधिक सदस्यों के द्वारा उच्च सार्वजनिक पद प्राप्त कर लिये जाने पर वे इस पद का उपयोग अपनी भू-सम्पत्ति को बढ़ाने एवं सुरक्षित करने के लिये भी करते और अन्य स्रोतों से भी धन प्राप्त करके अपने सामाजिक सम्मान के स्तर को बढ़ाते।

चाहे वे सम्राज्यवादी सरकार में कार्यरत थे या फिर अपने ग्रामीण भू-सम्पत्ति के क्षेत्र में, परन्तु सम्भ्रांत वर्ग के सदस्यों के महत्वपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक कार्य थे। गैर-सरकारी सम्भ्रांत वर्ग के सदस्य स्थानीय प्रभावशाली सदस्यों के रूप में जिला स्तर पर कार्य करते थे, शाही सरकार की स्थिरता तथा प्रभावशीलता के लिये उनका सहयोग अति आवश्यक था। उदाहरण के लिये वे :

- लोक हित तथा सार्वजनिक कार्यों के निर्माण एवं अनुरक्षण करते,
- अनौपचारिक तौर पर स्थानीय लोगों के झगड़ों का फैसला करते और स्थानीय लोगों तथा प्रशासन के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करते।
- प्रजारक्षक दलों तथा दूसरे प्रकार के आत्म-रक्षा संगठनों को (जैसे पुलिस) अपने-अपने क्षेत्रों में संगठित करते, और
- संकट की घड़ी में व्यवस्था बनाये रखने का कार्य करते। सामान्यतः जब कभी भी साम्राज्यवादी सरकार की शक्ति एवं प्रभावशीलता का ह्रास हुआ तब-तब उनके कार्यक्षेत्र एवं उत्तरदायित्वों में वृद्धि हुई। सम्राज्यिक व्यवस्था के अन्तिम वर्षों में इसको स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि जब कभी सम्राटों और शासक वंशों का उदय एवं पतन हुआ, सम्भ्रांत वर्ग की शासकों के अनुरूप अपने को ढालने की इच्छाशक्ति, एक अनोखी निरन्तरता को प्रदर्शित करती है। उदाहरण के लिये 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस वर्ग के वास्तविक लचीलेपन को देखा गया। यह वह समय था जबकि साम्राज्यवाद तथा आधुनिक उद्योग एवं व्यापार की वृद्धि ने परम्परागत कृषि अर्थव्यवस्था में गहन रूप से पैठ की। इससे भी अधिक :

- 1905 में परीक्षा व्यवस्था को समाप्त कर दिये जाने से सम्भ्रांत वर्ग की प्रगति का एक मुख्य केन्द्र बन्द हो गया, और

- 1911 की क्रान्ति ने सम्राज्यिक शासन के सम्पूर्ण ढांचे को धराशायी कर दिया जिसके साथ सम्भ्रांत वर्ग गहन रूप से जुड़ा हुआ था।

एक वर्ग के रूप में सम्भ्रांत वर्ग तुरन्त समाप्त न हुआ, बल्कि लगातार अपने को नई परिस्थितियों के अनुरूप ढालते हुए विद्यमान रहा यद्यपि इसका स्वरूप विकृत होता गया था। परम्परागत समाज तथा राजनीतिक व्यवस्था का पूर्ण स्थायित्व एवं लचीलापन अखण्ड रूप से इस वर्ग के कार्यों और चरित्र से जुड़ा था।

2.2.2 कृषक

चीनी समाज का बहुसंख्यक वर्ग कृषक था। किसानों की स्थिति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र और एक काल से दूसरे समय में भिन्न-भिन्न थी। परन्तु कुल मिलाकर वे गरीब थे तथा उनका गहन रूप से शोषण किया गया था। तीसरी से छठी शताब्दी तक विस्थापन के बड़े दौर के बाद चीन के केन्द्रीय एवं दक्षिण क्षेत्र पूर्णतः बस गये और उपलब्ध भूमि की मात्रा में कोई विशेष वृद्धि न हो सकी। इस कारणवश कृषि भूमि पर आबादी का काफी दबाव बढ़ा। सिद्धान्त में, चीनी किसान भू-दास न थे, लेकिन वास्तविकता में उनकी हालत भू-दासों से अच्छी न थी। दरिद्रता एवं असुरक्षा के कारण वे जमींदारों के काश्तकार हो गये तथा वे अपनी फसल का आधा भू-लगान के रूप में जमींदारों को अदा करते थे। किसान जमींदारों के द्वारा की जाने वाली जबरन मांगों को पूरा करने तथा दूसरी ओर राज्य को अदा करने वाले भारी करों (बेगार भी शामिल था) के बीच फंस गये । करों का बोझा इतना दमनात्मक था कि वे अपना स्वतंत्र कृषक स्तर खो बैठे तथा हजारों किसान अपने गाँवों से भागने लगे और वे शक्तिशाली जमींदारों के मात्र काश्तकार बन गये। ये जमींदार इन काश्तकारों की राज्य के अधिकारियों द्वारा की जाने वाली जबरदस्त वसूली से सुरक्षा करते थे।

आये दिन बाढ़, सूखा और अन्य प्राकृतिक आपदाओं ने किसानों की दरिद्रता को और बढ़ाया ये आपदायें जल्दी-जल्दी आती थीं और इनके परिणाम उस समय और भयंकर होते जिस समय शाही सरकार कमजोर होती थी और वह सामान्य कृषि गतिविधियों के लिये बांधों झीलों और दूसरे आवश्यक सार्वजनिक कार्यों को अनुरक्षण नहीं दे पाती थी। जब कभी भी केन्द्रीय प्रभुत्व कमजोर हो जाता, तब स्थानीय अधिकारियों या सम्भ्रांत वर्ग के सदस्यों के द्वारा बलपूर्वक किसानों से की जाने वाली अवैध वसूलियों पर कोई नियन्त्रण नहीं होता था। जब भी चीन के इतिहास में इस प्रकार का समय आता, तब हम देखते हैं कि गुप्त संस्थाओं की प्रचुरता हो जाती और डकैतियों की घटनाओं में वृद्धि होने लगती। कुल मिलाकर गुप्त संस्थाओं, डकैतियों और अन्य प्रकार की अराजकता का कारण किसानों एवं ग्रामीण समाज के अन्य गरीब तबकों के बीच गहराता असन्तोष एवं अभाव का फूट पड़ना था। अपनी बढ़ती कठिनाइयों के कारण किसान अक्सर ऐसी संस्थाओं की रचना करते थे जिनको गुप्त रखना पड़ता था क्योंकि राज्य के द्वारा उनकी जोरदार तलाश की जाती थी। यह विशेषकर उन किसानों के बारे में सत्य था जो, आर्थिक तथा राजनीतिक मजबूरियों के कारण, अपने घर बार छोड़ने के लिये बाध्य हुए और आजीविका की खोज में प्रवासी हो गये। स्वाभाविक ही था कि जब कभी कठिन समय आता तब ये संस्थायें किसी न किसी प्रकार की डकैती का सहारा लेती और सामान्यतः स्थानीय धनी लोग इनका निशाना होते थे।

किसानों के बीच वास्तविक जन असन्तोष एवं हताशा के समय, अक्सर ये संस्थायें किसान विद्रोहों का केन्द्र बिन्दु बन जाती थीं और कभी-कभी ये उन व्यापक स्तर के विद्रोहों का भी केन्द्र बन जाती जो अधिकारीगणों तथा शासक वंश के विरुद्ध होते थे। समय-समय पर, काफी बड़ी सेनाओं का गठन किया जाता और ये सेनायें स्थानीय या प्रांतीय सरकारों के केन्द्रों में लूट-खसोट करती या स्वयं राजधानी की ओर अग्रसर होने का प्रयास करतीं। जब वे शाही मुख्यालयों में उथल-पुथल मचाने में सफलता प्राप्त कर लेतीं जैसा कि चीन के इतिहास में कई बार हो चुका है, इसका निरपवाद अर्थ था शासक वंश का धराशाही होना। इस प्रकार जहाँ किसान एक ओर शोषित एवं पीड़ित वर्ग था, वहाँ उसने कई बार नए शासक परिवार को चीन के सिंहासन पर बैठा कर राजनीतिक मामलों में निर्णायक भूमिका अदा की।

2.2.3 व्यापारी वर्ग

कन्फ्यूशियस दर्शन की योजनाओं के अनुसार व्यापारी सामाजिक व्यवस्था के सबसे निचले स्तर पर थे, यहाँ तक कि कृषकों से भी छोटे समझे जाते थे। वाणिज्य कृषि की भाँति नहीं था तथा वाणिज्य को आर्थिक गतिविधि की प्राथमिक इकाई नहीं समझा जाता था। लेकिन व्यापार में इस औपचारिक निम्न स्तर को व्यवहार में नहीं अपनाया गया था तथा व्यापारियों के परिवारों के समृद्ध होने पर प्रतिबंध न था। वे अपने सामाजिक स्तर को भी ऊँचा उठा सकते थे। बहुत से व्यापारियों ने अथाह सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी। सम्पन्न व्यापारियों ने निरपवाद रूप से अपने सामाजिक स्तर को बढ़ाने के लिये कोशिश की। यह कार्य उन्होंने या तो सम्भ्रांत परिवारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध कायम करके किया या फिर अपने पुत्रों के लिये कोई सरकारी पद प्राप्त करके। सरकारी पदों को सामान्य परीक्षा के तरीके से प्राप्त करने के साथ-साथ सरकारी पदों एवं उपाधियों की प्रत्यक्ष खरीदारी ने यह सुनिश्चित कर दिया कि व्यापारिक परिवारों की काफी बड़ी संख्या या कम से कम एक व्यापारिक परिवार का एक सदस्य सरकारी पदों पर आसीन हो सकता था। यह भी एक सामान्य प्रथा थी कि धनी व्यापारी अपने लाभ का कुछ भाग भूमि खरीदने में निवेश कर देते थे। ऐसा वे आर्थिक लाभ की अपेक्षा सामाजिक सम्मान के लिये करते। इससे यह हुआ कि उच्च व्यापारी वर्ग तथा सम्भ्रांत वर्ग और सरकारी पदाधिकारियों में घनिष्ठ सम्बन्ध कायम हो गया। शाही शासन के बाद व्यापार के तेजी से विकास एवं कुछ प्रकार की व्यापारिक गतिविधियों में सम्भ्रांत वर्ग के सदस्यों के शामिल हो जाने से उन दोनों वर्गों के बीच की दूरी पहले से काफी कम हो गई।

लेकिन व्यापार पर राज्य के नियन्त्रण के कारणवश व्यापारिक वर्ग के स्वतंत्र आर्थिक एवं राजनीतिक विकास में रुकावट आयी। चीन में राज्य ने यह भली-भाँति समझ लिया था कि व्यापार राजस्व का एक शक्तिशाली स्रोत था और इसलिये उसने इस पर कड़ा नियन्त्रण स्थापित किया। व्यापारिक गतिविधियों पर कर लगाने के साथ-साथ राज्य ने आवश्यक उपभोग की वस्तुओं जैसे कि नमक एवं लोहे पर दूसरी सदी ई.पू. के प्रारम्भ से लाभकारी एकाधिकार स्थापित करना शुरू कर दिया था। कुल मिलाकर चीनी व्यापारी वर्ग की विशेषता यह थी कि उसने इन नियन्त्रणों को चुनौती नहीं दी तथा व्यापार राज्य के लिये दुधारु गाय की भाँति बना रहा।

बल्कि इसके विपरीत बड़े-बड़े व्यापारी राज्य के साथ सहभागी का कार्य करते थे और व्यापार में राज्य के दलाल के रूप में कार्य करते थे। व्यापारियों की श्रेणियाँ एवं संगठन पारस्परिक सहायता संस्थाओं के रूप में कार्य करते पर कभी भी वे स्वतंत्र आर्थिक एवं राजनीति शक्ति तथा संघर्ष के केन्द्र न बन पाए, जैसा कि उन्होंने यूरोप में किया था।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित में कौन सा सही (√) या गलत (x) है? निशान लगाइये।

   i) चीन का समाज एक साधारण कृषि समाज था।

   ii) जमींदार अपने खेतों पर स्वयं खेती करते थे।

   iii) सम्भ्रांत वर्ग स्थानीय लोगों तथा प्रशासन के बीच मध्यस्थता का कार्य करता था।

   iv) सामाजिक पदानुक्रम में किसानों की अपेक्षा व्यापारी का नीचा स्थान था।

2) किसानों की दशा का विवरण 100 शब्दों में कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) उच्च सामाजिक स्तर को प्राप्त करने के लिये व्यापारियों द्वारा अपनाये गये तरीकों की एक सूची बनाइये।

....

....

....

....

....

2.3 कन्फ्यूशियसवादी राज्य

अब हम चीन की परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था का विवेचन करेंगे। यह कहना उचित ही होगा कि परम्परागत चीन में राज्य पूर्व-आधुनिक विश्व में एक निर्णायक स्थान रखता था। किस प्रकार से परम्परागत चीनी राज्य को अनोखा माना जा सकता है?

सिद्धान्त में जिन सीमाओं से चीन का निर्माण हुआ अर्थात् जोंक्यो (मध्यवर्ती राज्य) उनका कभी भी स्पष्ट रूप से निर्धारण नहीं किया गया। कन्फ्यूशियसवादी दर्शन के अनुसार, सम्राट को "सम्पूर्ण विश्व की जनता" का शासक समझा जाता था। उसके शासन के अधीन केवल वे ही प्रांत नहीं होते थे जो सीधे शाही प्रशासन के अन्तर्गत आते थे। वे क्षेत्र भी शामिल माने जाते थे जो मात्र चीनी सम्राट की अधीनस्थता को स्वीकार कर लेते थे लेकिन ये क्षेत्र प्रत्येक प्रकार से अपना शासन स्वयं ही चलाते थे। इस तरह से तिब्बत एवं मंगोलिया जैसे बाह्य क्षेत्र चिंग वंश के अधीन थे। एक अधिकारी साम्राज्यिक प्रतिनिधि के रूप में इन राज्यों में रहता था। लेकिन कुछ क्षेत्रों में यह प्रतिनिधि भी उपस्थित नहीं होता था और उसका प्रभुत्व एक प्रतीक मात्र ही था।

इन सबके परिणाम स्वरूप चीनी साम्राज्य के विदेशी मामलों तथा आन्तरिक मामलों का अन्तर काफी अस्पष्ट रहा। गैर-चीनी जनता तथा राज्यों के साथ सामान्य कूटनीतिक एवं व्यापारिक संबंध कुछ अपवादों को छोड़कर "नजराना व्यवस्था" के द्वारा निर्धारित या शासित होते थे। विदेशी प्रतिनिधियों या व्यापारिक प्रतिनिधि मंडलों के आगमन को चीनी सम्राट को नजराना पेश करने वाले प्रतिनिधि मंडल समझ लिया जाता था और उनके साथ इसी प्रकार का व्यवहार किया जाता। उनका इस्तेमाल चीनी सम्राट की आन्तरिक स्थिति तथा सम्मान को मजबूत करने के लिये किया जाता। चीनी सम्राट एक विशाल एकीकृत जनता का सम्राट था जिसमे चीनी तथा गैर चीनी जनता सम्मिलित थी। वे चीनी जनता को "सभ्य" (जैसा कि चीनी समझते थे) तथा गैर-चीनी जनता को "बर्बर" मानते।

जब कभी भी साम्राज्यिक सरकार एवं दूसरे राज्यों या जनता के बीच संघर्ष हो जाता, तब इसको "नजराना व्यवस्था" के अन्तर्गत सरलता से समायोजित नहीं किया जा सकता था।

लेकिन शाही सरकार इसको केवल अस्थायी भटकाव मानती थी। युद्ध का किसी न किसी बिन्दु पर अन्त हो ही जाता। यदि इन युद्धों का अन्त गतिरोध में या शाही सेनाओं की विजय में होता, तब युद्ध सामान्यतः शुरू होने से पूर्व की स्थिति को बनाये रखा जाता यदि इनका अन्त विदेशी शक्तियों की विजय के रूप में होता तब भी चीनी व्यवस्था टूटती नहीं थी। यही 13वीं शताब्दी में मंगोल विजय तथा 17वीं शताब्दी में मंचू विजय के साथ हुआ और विजेताओं ने स्वयं ही चीनी सम्राट के गौरवशाली पद को साधारणतः प्राप्त कर लिया। यह वास्तविकता थी कि विभिन्न जातीय उत्पत्तियों तथा विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि से आये शासकों ने चीनी साम्राज्य में उच्च पदों को प्राप्त किया लेकिन उन्होंने शाही व्यवस्था को धराशायी करने में कोई भूमिका नहीं निभायी। जब तक इन शासकों ने राज्य के कार्यों में कन्फ्यूशियसवादी सिद्धान्तों का अनुसरण किया तब तक जीवन सामान्य रूप से जारी रहा। इस दृष्टिकोण से हम परम्परागत चीनी राज्य को चीनी जनता का राष्ट्रीय राज्य नहीं मान सकते।

2.3.1 सम्राट

उपरोक्त उपभाग में आपको बताया गया है कि चीनी सम्राट एक कन्फ्यूशियसवादी राजा था। कन्फ्यूशियसवाद के अनुसार सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था तथा दूसरी ओर प्राकृतिक व्यवस्था दोनों एक दूसरे से अखण्ड

रूप से जुड़े हैं। सम्राट का मुख्य कार्य यह था कि वह इस विश्वव्यापी व्यवस्था को बनाये रखे। इस तरह से, सम्राट को न केवल सम्राज्य के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में बड़े उपद्रवों के लिये बल्कि बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि जैसे प्राकृतिक उपद्रवों एवं आपदाओं के लिए भी उत्तरदायी ठहराया जाता था। इस प्रकार के "भयंकर अव्यवस्थित" समयों मे कन्फ्यूशियस परम्पराओं के अनुसार सम्राट के विरुद्ध विद्रोहों को वास्तव में वैध ठहराया गया। एक सफलतापूर्ण विद्रोह को इस बात का प्रमाण माना जाता था कि स्वर्ग ने शासन करने के अपने आदेश को वापस ले लिया। सम्भवतः चीन के सम्राट की इस प्रकार की व्याख्या की गई है, वह जापान के सम्राट से भिन्न था, वह प्रतीक मात्र न था, बल्कि भूमि का वास्तविक शासक था। वह :

- भूमि का मुख्य कार्यकारी और सम्पूर्ण प्रशासन की धुरी था,
- अपने अधिकारियों की नियुक्ति करता था, उनका हस्तांतरण करता, उनको दण्ड देता तथा उनकी सेवायें समाप्त कर सकता था।
- रिपोर्टों एवं निर्देशों के द्वारा अपने अधिकारियों की गतिविधियों का निरीक्षण एवं मार्ग निर्देशन करता था।
- साम्राज्य के किसी भी भाग में किसी भी मामले में जब कभी आवश्यक होता व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप कर सकता था।

इन सबका करना या नहीं करना सम्राट की अपनी योग्यताओं एवं अभिलाषाओं पर निर्भर करता था। फिर भी उससे कुछ न कुछ करने की आशा की जाती थी। सम्राट एक मात्र विधि निर्माता भी था। साम्राज्य का कानून सम्राट एवं उससे परवर्ती शासकों द्वारा दिये गये निर्णयों और निर्देशों के संग्रह मात्र से कुछ अधिक न था। वह सेनाओं का सर्वोच्च कमाण्डर होता था।

सम्राट ही वास्तविक शासक होते थे और वे प्रतीक मात्र नहीं थे। यही कारण था कि जिस समय 19वीं सदी में चीन ने एक बड़े संकट एवं अपमान का सामना किया, तब सारा आरोप स्वयं सम्राट के ऊपर लगाया गया न कि उसके पदाधिकारियों पर। 19वीं सदी के मध्य एवं उत्तरार्द्ध के बड़े कृषक विद्रोहों और उदित होते उग्र राष्ट्रवादी आंदोलनों में एक सामान्य बात यह थी कि उन सभी ने शाही परिवार के शासन को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। ठीक उसी समय, सम्राट स्वयं को परम्परागत कन्फ्यूशियस राजनीतिक व्यवस्था का संरक्षक समझते थे, जिसके कारण चीन को संकट एवं पतन से बाहर निकालने के लिये उन्होंने आवश्यक क्रान्तिकारी परिवर्तनों को करने में संकोच किया। फिर भी उन्होंने जो कुछ सुधार किये वे काफी कम एवं देर से किये गये थे। इन सभी का परिणाम यह हुआ कि 19वीं सदी के अन्तिम तथा 20वीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में चीन की शाही संस्थाओं में और पतन हुआ। उस समय की घटनाओं ने इस प्रक्रिया को तेज किया तथा 1911 की क्रान्ति ने नाटकीय तरीके से इसको धाराशायी कर दिया।

2.3.2 नौकरशाही

सम्राट की संस्था के अतिरिक्त चीनी राजनीतिक व्यवस्था का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ नौकरशाही था। चीन का एकीकरण सम्राट चिन-शी-हुआंग-ती के द्वारा 221 ई.पू. में किया गया । तभी से सम्राज्य के दिन-प्रतिदिन प्रशासन का संचालन नौकरशाही के द्वारा किया जाता था। यह नौकरशाही आधुनिक विश्व से पूर्व किसी भी नौकरशाही की अपेक्षा अपनी संरचना एवं कार्यों में अधिक सुस्पष्ट, अधिक विकसित और अधिक तर्कसंगत थी। यह माना ही नहीं जा सकता कि चीन जैसा विशाल देश इतनी सदियों तक इस तरह की नौकरशाही के बिना एकीकृत रह सकता था और वह सरकार की एक स्थायी व्यवस्था को बनाये रख पाता।

शाही दरबार के अधिकारियों से लेकर जिला स्तर के अधिकारियों तक सम्पूर्ण नौकरशाही का निर्माण एक विशेष प्रकार की कोर से किया जाता था। यह सुस्पष्ट नियमों, अधिनियमों के द्वारा शासित होती थी। ये नियम एवं अधिनियम अधिकारियों की भर्ती, उनकी तरक्की, हस्तांतरण, सेवा से निरस्त करने एवं दण्ड देने से सरोकार रखते थे और इनका संबंध इससे भी था कि उनको अपने कर्तव्यों को किस ढंग से पूरा करना था। एक तरह से ये नियम एवं अधिनियम कठोर एवं प्रतिबंधित प्रकृति के थे और इनके द्वारा यह सुनिश्चित किया गया था कि अधिकारी गण सम्राट की आज्ञा पालन करें तथा उसके सहायक के तौर पर कार्य करें। लेकिन दूसरी ओर नौकरशाही को कुछ स्वायत्तता भी प्रदान की गई थी। इसी कारणवश विभिन्न सम्राटों की स्वेच्छात्मक सनक पर इसने रोक लगाने का भी कार्य किया। एक अधिकारी के विषय में यह समझा जा सकता था कि यदि वह नियमों के अनुरूप कार्य करता और अपने कार्यालय के कार्यों को सुचारु रूप से करता तब सम्राट या उसके अन्य सर्वोच्च अधिकारियों के द्वारा व्यर्थ में उस अधिकारी को सताया नहीं जायेगा।

चीनी नौकरशाही की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी भर्ती करने की व्यवस्था थी। चीनी साम्राज्य के पहले एक हजार वर्षों में नौकरशाह बनने के कई रास्ते थे। इनमें सरकारी पदों को खरीदना या परिवार के दूसरे सदस्य से उत्तराधिकार में प्राप्त करना भी शामिल था। लेकिन इन सबके बावजूद भी 11वीं सदी ई. से नौकरशाही में भर्ती होने का प्राथमिक साधन परीक्षाओं की केन्द्रीकृत व्यवस्था थी। तीन वर्षों के दौरान एक बार सम्पूर्ण साम्राज्य में परीक्षा का आयोजन किया जाता था। इस परीक्षा में सैद्धान्तिक रूप से सभी पुरुष शामिल हो सकते थे चाहे उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि कोई भी रही हो। इस परीक्षा के द्वारा परीक्षार्थी की कन्फ्यूशियस संबंधी ज्ञान की परीक्षा ली जाती थी । परीक्षार्थी की पहचान को पूर्ण रूपेण गुप्त रखा जाता था जिससे कि परीक्षक को परीक्षार्थी की कोई व्यक्तिगत जानकारी न हो पाती और उनका निर्वाचन निष्पक्ष तौर होता था। जो लोग परीक्षा में सफलता पूर्वक उत्तीर्ण होते थे वे व्यक्तिगत तौर पर अभिजात वर्ग में शामिल हो जाते। यदि कोई प्रत्याशी जिला स्तर की परीक्षा को उत्तीर्ण करके प्रांतीय स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता तब उसकी नियुक्ति साम्राज्यिक सरकार के अधिकारी के रूप में हो सकती थी।

परीक्षा के द्वारा भर्ती करने से नौकरशाही का काफी महत्त्व हो गया था। इससे यह सुनिश्चित था साम्राज्य के अधिकारी गण कुल मिलाकर पूर्ण रूपेण बुद्धिमान तथा विद्वान लोग थे। कन्फ्यूशियस विचारों में लम्बी शिक्षा तथा प्रशिक्षण के कारण कन्फ्यूशियस नीति विषयक तथा राजनीतिक मूल्यों के प्रति उनकी निष्ठा सुनिश्चित हो जाती। पक्षपात की तुलना में उनकी भर्ती गुणों के आधार पर की जाती थी और यह एक वास्तविकता भी थी। इसी कारणवश उनको उच्च स्तर का आत्म-सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त थी। यदि उनकी नियुक्ति गुण-दोष के आधार पर न होती तब सम्भवतः उनको यह सम्मान प्राप्त न होता। परन्तु कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि सभी अधिकारी ईमानदार थे या वे अपने कार्यालयों में दबाव एवं सिफारिशों के आधार पर कार्य नहीं करते थे। किन्तु यह कहा जा सकता है कि निश्चय ही चीनी अधिकारियों की कुछ प्रतिष्ठा एवं स्तर बना रहा यद्यपि यदाकदा उनको अपने से उच्च अधिकारियों तथा सम्राट के पक्ष में कार्य करना होता था।

इन सब के बावजूद 19वीं सदी ई. में चीन की नौकरशाही को उस समय अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करना पड़ा जबकि आधुनिक औद्योगिक पश्चिमी संस्कृति ने चीन के अन्दर प्रवेश कर स्थिति को और जटिल बना दिया। इस परिस्थिति का सामना करने की अपेक्षा चीनी नौकरशाही अपनी विद्वता तथा आत्म-सम्मान के जाल में फंस कर रह गई। ऐसे कई बुद्धिमान अधिकारी थे जिन्होंने देश के सम्मुख आयी इन चुनौतियों को ठीक प्रकार से समझा और इन चुनौतियों का सामना करने के लिये साहसिक कदम उठाने एवं सुधार की वकालत की। किन्तु इस प्रकार के अधिकारियों की संख्या काफी कम थी। अधिकतर अधिकारीगण पुरानी परम्परा के ही समर्थक थे और उनके कार्य करने के तौर तरीके इस प्रकार के थे कि नवीन परिवर्तनों के दबावों के अनुरूप कार्य करने में वे स्वयं को असक्षम पा रहे थे। 1898 में जिस सुधार आंदोलन का नेतृत्व कांग-यू-वी तथा छोटे अधिकारियों ने किया था उसकी पराजय के बाद चीन को अन्तिम रूप से संकट से निकालने का कार्य परम्परागत समाज के इस महत्त्वपूर्ण वर्ग के हाथ से निकल कर नवीन उदित होते वर्गों एवं शक्तियों के हाथों में चला गया। इन नवीन वर्गों एवं शक्तियों का पुरानी सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के साथ संबंध या निष्ठा बहुत कम थी।

बोध प्रश्न 2

1) हम यह क्यों कहते हैं कि चीन का सम्राट एक प्रतीक मात्र शासक न था ? उत्तर लगभग पांच पंक्तियों में दें।

....

....

....

....

....

2) चीन में नौकरशाही को भर्ती किए जाने वाले तौर-तरीकों की विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

2.4 19वीं सदी के प्रारम्भ में पतन एवं संकट

अक्सर यह कहा जाता है कि चीन पर पश्चिमी साम्राज्यवाद का जो प्रभाव पड़ा उसी के कारण चीन की परम्परागत सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का पतन हुआ। लेकिन अधिकतर इतिहासकार इस पर सहमत होंगे कि चीन में 19वीं शताब्दी ई. में जो कुछ घटित हुआ उसकी इतनी सरल व्याख्या नहीं की जा सकती। 19वीं सदी ई. के मध्य जिस समय पश्चिमी नौ सैनिक शक्तियों ने अपनी बन्दूकों को चीन की ओर किया उस समय चीन की परम्परागत व्यवस्था के अन्दर पहले से ही संकट एवं पतन के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे। इस भाग में आपका परिचय उन कारणों से कराया जायेगा जिन्होंने चीन के साम्राज्य को विशेषतौर पर पश्चिमी साम्राज्वाद के प्रबल आक्रमण के दबाव के सम्मुख असहाय बना दिया।

2.4.1 चिंग के अधीन राज्य एवं समाज

19वीं सदी के प्रारंभ में चीन का विशाल क्षेत्र चीन के दक्षिण समुद्री तट पर स्थित द्वीपों से उत्तर में मंचूरिया तक पूरब में चीनी समुद्र से पश्चिम में सिकयांग तक फैला हुआ था और इस विशाल भू क्षेत्र पर डेढ़ शताब्दी तक चिंग नाम के शासक घराने का शासन था। ये चिंग शासक मांचू थे इसलिये वे जातीय एवं सांस्कृतिक तौर पर चीनियों से भिन्न थे। चीन में जितने भी वंशो ने शासन किया था उन सब में मांचुओं का शासन कई तरह से सफल था। मांचू वंश ने चीन पर विजय उस समय प्राप्त की जब 1680 के दशक में प्रारम्भिक युद्धों का अन्त हो गया और इसके बाद चीन में अपेक्षाकृत शांति एवं स्थायित्व बना रहा। इन वर्षों में मांचू शासकों को न तो सेनापतियों की अभिलाषाओं का शिकार होना पड़ा और न ही अधिकारियों या कृषक विद्रोहों की ओर से कोई गम्भीर चुनौती दी गई। तिब्बत एवं मंगोलिया को अधीन कर लिया गया और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह था कि विशेष प्रकार के राजनीतिक ढांचे तथा चिंग सम्राट के साथ धर्म संबंधों के द्वारा इन दोनों क्षेत्रों को चीनी साम्राज्य में और मजबूती के साथ एकीकृत कर दिया गया। चिंग शासकों के लिये यह एक विशेष प्रकार की सफलता थी क्योंकि पहले इनको "समस्या वाले क्षेत्र" कहा जाता था पर चिंग शासकों के समय में ये क्षेत्र अपेक्षाकृत शांतिमय बने रहे। यद्यपि 18वीं सदी ई. में तिब्बत में चिंग शासकों के विरुद्ध कुछ विद्रोह अवश्य हुए। इन विद्रोहों को सैनिक अभियानों की मदद से शीघ्र ही दबा दिया गया। ये सैनिक अभियान आर्थिक दृष्टि से काफी खर्चीले थे किन्तु सम्पूर्ण साम्राज्य में इसके कारण दंगे नहीं हो पाये।

चिंग शासन के प्रारम्भिक डेढ़ सौ वर्षों में चीन के अन्दर मात्र तीन सम्राटों ने शासन किया। ये तीनों सम्राट ओजस्वी और मेहनतकश राजा थे। वे अपने साम्राज्य के मामलों में पर्याप्त रुचि लेते थे। इनके गुणों के कारण प्रशासन की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई और उसमें निरन्तरता बनी रही तथा वह सक्षम भी बना रहा। सम्राटों के द्वारा प्रांत में अधिकारियों को पूर्ण रूपेण चुस्त रखा जाता और राजा उनसे रिपोर्ट मांगता तथा छोटे-छोटे मामलों तक के लिए वह अधिकारियों को निर्देश भेजता। अधिकारियों की गतिविधियों पर नियन्त्रण रखने के लिये सम्राटों ने जासूसी एवं सूचनाओं के लिये एक तन्त्र को संगठित किया। कागज़ाती कार्यवाहियां सम्राट को स्वयं ही करनी पड़ती थी जिनसे उनका कार्य काफी कठिन हो गया। इसलिये चिंग शासकों ने कागज़ाती कार्यों को निपटाने के लिये उच्च पदाधिकारियों की एक "उच्च समिति" का गठन किया। यह समिति इन कागजों की जांच पड़ताल के बाद उनको सम्राट को हस्तांतरित कर देती थी।

परन्तु चिंग शासकों की प्रारंभिक सफलता में बाद के पतन एवं कमजोरी के बीज भी समाये हुए थे। शांति एवं स्थायित्व की लम्बी अवधि के कारण तेजी से जनसंख्या में भयावह वृद्धि हुई और जिसके गम्भीर आर्थिक परिणाम हुए। बाह्य एवं आंतरिक चुनौतियों के अभाव में आत्म-सन्तोष का वातावरण बन गया और सैनिक संगठन की प्रभावशीलता में भी कमी आयी। प्रथम तीन चिंग सम्राटों के अधीन प्रशासनिक शक्तियों में लगातार केन्द्रीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति के भी विपरीत परिणाम हुए। इस प्रक्रिया के कारण प्रशासन का क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया और बाद में सम्राटों के द्वारा उसका संचालन क्षमता पूर्वक करना काफी कठिन हो गया। जिससे सम्पूर्ण प्रशासन में निष्क्रियता व्याप्त हो गई और वह बिल्कुल ठप्प पड़ गया गया । दूसरी ओर, सरकार के कार्यों के क्षेत्र में वृद्धि एवं जटिलता पैदा हो जाने के कारण प्रशासनिक अधिकारियों की संख्या में वृद्धि करने की आवश्यकता हुई किन्तु चिंग शासक नौकरशाही की संख्या एवं आकार में वृद्धि करने

के विपरीत थे। इसके कारण प्रशासन की दक्षता और सीमित हो गई। इसके कारण शिक्षित कुलीन वर्ग के सदस्यों के लिये सरकारी सेवाओं में प्रवेश करना और कठिन हो गया जिससे कि इस महत्त्वपूर्ण वर्ग के बीच बेरोजगारी, हताशा तथा असन्तोष फैला। इस सबके कारण 19वीं सदी ई. के पूर्वार्द्ध में गम्भीर सामाजिक एवं राजनीतिक संकट उत्पन्न हुआ।

2.4.2 जनसंख्या का दबाव

17वीं तथा 19वीं सदियों के बीच चीन की जनसंख्या 15 करोड़ से बढ़कर 30 करोड़ हो गई। लगभग 80 प्रतिशत लोगों के जीवन यापन का कृषि ही मुख्य स्रोत था। खेती करने योग्य नयी भूमि न होने के कारण बढ़ती जनसंख्या का दबाव भूमि पर बहुत अधिक हो गया।

चीन में भूमि सम्पत्ति का बंटवारा परिवार के पुत्रों के बीच एक समान किया जाता था जिसके कारण वहाँ पर भूमि छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित होती चली गई। इसके कारण कृषक परिवारों में दरिद्रता बढ़ती चली गई। इस प्रवृत्ति के ठीक विपरीत इस काल में भूमि के केन्द्रीयकरण एवं भू-स्वामित्व की प्रवृत्तियां भी प्रकट होने लगीं। कृषक अपने इन छोटे-छोटे खेतों को रख पाने में असक्षम होने के कारण, अपने से सम्पन्न किसानों को इन खेतों को बेचने के लिये मजबूर होते चले गये। वे किराये पर खेत लेकर खेती करने वाले किसान बन गये और जमींदारों के द्वारा इस तरह के कृषकों का भयंकर शोषण किया जाने लगा। कुछ किसान भूपति कुलीन वर्ग पर इसलिये निर्भर हो गये क्योंकि ये किसान उन भारी करों को अदा कर पाने में असक्षम थे जिनको राज्य के द्वारा इन पर थोपा गया था। चीन के दक्षिण एवं मध्य के उपजाऊ क्षेत्रों में मुख्य रूप से काश्तकारी एवं अनुपस्थित जमींदारी प्रचलित थी। परन्तु उत्तरी चीन के उस क्षेत्र में भी जहाँ पर अधिकतर किसानों को भूमि पर मालिकाना अधिकार प्राप्त थे, किसानों पर गरीबी, कर्ज और राज्य के द्वारा वसूल किये जाने वाले करों का भार था।

इन उपरोक्त कारणों से दो तरह का विस्थापन हुआ :

1) दक्षिणी चीन के उन क्षेत्रों से जनसंख्या का समुद्र पार के देशों को विस्थापन, विशेषकर जहाँ पर घनी आबादी थी।

2) बहुत से किसान उन पहाड़ी क्षेत्रों में जा कर बस गये जिनकी भूमि अपेक्षाकृत कम उपजाऊ थी और जो अपेक्षाकृत आबादी हीन थे। ये दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम चीन में स्थित थे। ऐसा इन किसानों ने इस आशा के साथ किया कि वहाँ पर वे जमींदारों एवं राज्य अधिकारियों के दमन से मुक्त होंगे।

दीन होते किसानों तथा ग्रामीण कारीगरों के साथ बढ़ती जनसंख्या के कारण, चीन की सरकार उनको *"लियू मिन"* (घुमक्कड़ लोग) कहने लगी। ये निश्चित रूप से दलित, बेघर एवं दरिद्र लोग थे। इनकी संख्या विशाल थी और ये वे लोग थे जिनको उनके अपने परम्परागत घरों तथा व्यवसायों से उखाड़ दिया गया था। इन्हीं लोगों ने डकैती, तस्करी तथा अन्य प्रकार की गैर-कानूनी गतिविधियों के लिये पृष्ठभूमि तैयार की।

2.4.3 प्रशासनिक पतन

चिंग वंश के अधीन साम्राज्य के विकास एवं प्रसार के साथ ही प्रशासन के कार्यों में भी वृद्धि हुई। लेकिन इन कार्यों का समाधान करने के लिये औपचारिक प्रशासनिक तन्त्र का उचित विकास न हो सका। इस सन्दर्भ में जनसंख्या में तेजी के साथ हुई वृद्धि के दृष्टांत को उद्धृत किया जा सकता है। लेकिन आबादी में हुई वृद्धि के अनुरूप नागरिक सेवाओं के आकार में अर्थात् सम्पूर्ण प्रशासनिक ढांचे में वृद्धि नहीं की गई। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अधिकारियों की संख्या लगभग वही थी जो 17वीं शताब्दी में थी। ऐसा इसलिये था क्योंकि जहाँ एक ओर आर्थिक दबाव थे वहीं दूसरी ओर मांचू सम्राट इस बात से चिंतित थे कि प्रशासन पर उनका नियंत्रण कमजोर होने लगा था।

इस स्थिति का एक परिणाम यह हुआ कि चिंग सरकार के अधिकारियों को बहुत अधिक कार्य करना होता था और भारी भरकम उत्तरदायित्वों की तुलना में उनको काफी कम वेतन मिलता। यह विशेष रूप से उन अधिकारियों के विषय में सत्य था जो जिलाधीश जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन थे। उन्होंने देखा कि उनके पास जो कार्य थे उनको उनके लिये शारीरिक रूप से पूरा करना असम्भव था और इसी कारणवश इन कार्यों के अधिकतर भाग को सहायक कर्मचारियों, सलाहकारों, क्लर्कों, संचालन कर्ताओं, लेखपालों आदि के द्वारा सम्पन्न किया जाता था।

इस तरह से प्रशासन में घूस एवं भ्रष्टाचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व ढंग से वृद्धि हुई। इसके फलस्वरूप उन

किसानों का आर्थिक बोझा बढ़ा जिनको अपने करों की अदायगी के समय या अन्य न्यायिक प्रक्रियाओं में सम्मिलित होने के समय इस भ्रष्ट होते प्रशासन के सम्पर्क में आना होता।

कार्य के लगातार बढ़ने विशेषकर कागज कार्य के बढ़ जाने का तात्पर्य था कि अधिकतर अधिकारियों को नियमानुसार ही कार्य करना होता। बहुत से अधिकारियों ने उन कार्यों की ओर कम ध्यान देना शुरू कर दिया जो उनके कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आते थे। उन्होंने ऐसा इस आशा के साथ किया कि इस तरह की समस्याओं का स्वयं ही समाधान हो जायेगा या इस तरह की समस्याओं को उग्र रूप धारण करने से पहले ही अन्य क्षेत्रों को हस्तांतरित कर दिया जायेगा। उस समय ऐसे बहुत कम अधिकारी थे जिन्होंने अपनी इच्छानुसार खतरा उठाते हुए भी इन समस्याओं की ओर अपने उच्च अधिकारियों और स्वयं सम्राट का ध्यान आकृष्ट किया।

इन प्रतिष्ठित नागरिक सेवाओं में सीमित होते अवसरों का तात्पर्य था कि कुलीन वर्ग तथा शिक्षित लोग बेरोजगार रहने लगे या फिर वे कम वेतन पर ग्रामीण अध्यापक या कर्मचारी या अधिकारियों के ऊपर निर्भर रहने वाले कार्यों को करने लगे। इसके कारण जनसंख्या के इस वर्ग में हताशा एवं निराशा बढ़ी। ठीक इसी समय, उन लोगों पर भी दबाव बढ़ रहा था जो प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत थे, जहाँ एक ओर उनको स्वयं को सम्पन्न करना पड़ता वहीं दूसरी ओर उनको अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों तथा दूसरों की सहायता अन्य दूसरे तरीकों से करनी होती। इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि कन्फ्यूशियस विचारधारा के कारण सरकारी अधिकारियों में नैतिक उत्साह पहले काफी रहता था किन्तु 19वीं शताब्दी में अधिकारियों के इस उत्साह में निश्चित रूप से कमी आने लगी थी। अधिकारीगण अपने कर्तव्यों की अवहेलना करने लगे, स्थानीय प्रबुद्ध वर्ग के द्वारा जो अन्याय पूर्ण कार्य किये जाते, उनको ये अनदेखा करते और ऐसा धन जो लोकहित एवं अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिये होता उससे ये अधिकारीगण अपने जेबें भरने लगे। इस प्रतिमान में अपवाद भी थे किन्तु वे बहुत ही कम थे।

2.4.4 आर्थिक संकट

प्रशासन में भ्रष्टाचार व्याप्त होने के कारण शाही खजाने में पहुँचने वाले राजस्व में कमी आयी। यह अनुमान किया गया है कि लोगों को अदा किये गये राजस्व का एक तिहाई से लेकर पांचवा भाग तक ही केन्द्रीय सरकार के कोष मे पहुँच पाता था।

भूमि कर ही राजस्व का मुख्य स्रोत था और उसका मूल्य माल के रूप में तय किया जाता था किन्तु किसानों के द्वारा उसका भुगतान नकद में किया जाता था। राजस्व की इस प्रणाली में अधिकारियों के द्वारा सभी स्तरों पर हेरा-फेरी की जाती थी। सरकार ने 18वीं सदी में कुछ निश्चित चावल की मात्रा का मूल्य चांदी में तय किया, लेकिन किसान इसकी अदायगी केवल तांबे में ही करने में सक्षम थे। इसका तात्पर्य यह हुआ कि तांबे की मात्रा चांदी के बराबर तय करनी पड़ती थी। स्थानीय प्रशासनिक अधिकारीगण चांदी-तांबे के विनिमय की दरों को इस ढंग से निर्धारित करते जिससे कि वे किसानों से अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त कर सकें। लेकिन जब उसको सरकार को हस्तांतरित किया जाता तब वे सरकारी विनिमय दर का अनुसरण करते तथा यह दर काफी कम थी। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया वैसे-वैसे यह दुराचार बढ़ता गया और इसके कारण सरकार के राजस्व में काफी गिरावट आयी। इसी बीच करों में अपार वृद्धि के कारण किसानों में असन्तोष भी बढ़ा।

19वीं सदी में समस्या और भी जटिल हो गई जबकि सिक्कों को निर्मित करने के लिये चांदी एवं तांबे में कमी आयी। जहाँ एक ओर स्थानीय खानों से इन धातुओं का उत्पादन कम होने से यह घटित हुई वहीं दूसरी ओर यह समस्या इसलिये गम्भीर हो गई क्योंकि 1820 के दशक से अफीम के अवैध व्यापार को वित्तीय सहायता देने के लिये चांदी का उपयोग किया जाने लगा। इसका परिणाम यह हुआ निम्न स्तर की मुद्रा का प्रसार हो गया और इसका चांदी तथा तांबे की मुद्रा के बीच होने वाली विनिमय दर पर प्रतिकूल असर पड़ा।

केन्द्रीय सरकार के कमजोर एवं अस्थिर आधार का तात्पर्य था कि 19वीं सदी के मध्य में युद्ध एवं गदर का जो संकट पैदा हुआ उसका सामना करने के लिये सरकार स्वयं किसी बड़े कार्यक्रम का प्रारम्भ न कर सकी। सरकार पर विजेताओं के द्वारा भारी हर्जानों को थोपा गया। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अफीम युद्धों एवं अन्य सैनिक अभियानों के बाद पश्चिमी शक्तियों ने चीनी साम्राज्य के आर्थिक आधार को और कमजोर किया।

2.4.5 सैन्य कमजोरियां

एक शताब्दी से अधिक शांति कायम रहने तथा बड़े सैनिक अभियानों तथा चुनौतियों के अभाव के कारण चिंग साम्राज्य की सैनिक शक्ति काफी क्षीण हो गई थी। सेना की अनेकों इकाईयाँ थीं जो देश भर में फैली हुई थीं, ये सैनिक निष्क्रय जीवन व्यतीत कर रहे थे जिसके कारण उनमें पतन एवं हताशा घर कर गई। सेना की ये इकाईया किसी भी प्रकार का संघर्ष करने को तैयार न थीं। अफीम युद्धों के प्रारम्भ होने से काफी पहले 1813 में स्वेचवान में श्वेत कमल (White Lotus) विद्रोह हुआ और सेना इस विद्रोह पर नियन्त्रण करने में असफल रही। अन्त में "ग्रीन स्टैन्डर्ड " (Green Standard) की सेनाओं तथा स्थानीय लड़ाकुओं ने ही इस विद्रोह का दमन करने में सफलता प्राप्त की। जिस समय 1820 तथा 1830 के दशकों में अवैध अफीम व्यापार का प्रसार प्रारम्भ हुआ उस समय सबसे पहले मांचू सेना के सैनिकों को अफीम के सेवन की आदत ने गम्भीर रूप से प्रभावित किया।

चिंग शासकों ने इस भय से कि सेना उनके शासन को चुनौती दे सकती थी, सैनिक शक्ति का निर्माण नहीं किया। इस तरह से चिंग शासकों ने सैनिक संगठन की ताकत को कम कर दिया। उन्होंने सेना के एक ऐसे बेढंगे तंत्र की स्थापना की जिसके अन्तर्गत विरोधाभासों से पूर्ण प्रभुत्व वाली कई शक्तियाँ कायम थीं। विभिन्न सैनिक कमाण्डों को एक दूसरे से अलग रखा गया था। ऐसा इसलिए किया गया था जिससे कि इन सैनिक इकाईयों के बीच केन्द्रीय शाही प्रभुत्व के विरुद्ध एकता न बन सके। इससे सैन्य तन्त्र में नौकरशाही की लालफीताशाही कायम हो गई और उसकी लड़ाकू क्षमता में काफी गिरावट आयी। इस सन्दर्भ में समुद्री डाकुओं के गिरोहों का उदाहरण दिया जा सकता है। 19वीं सदी के प्रारम्भ में चिंग शासक इस समस्या को रोकने में असफल रहे थे। इसी कारणवश ये समुद्री डाकुओं के गिरोह एक स्थल से दूसरे स्थल में उन्मुक्त रूप से भ्रमण करते रहते थे। सरकार की नौसेना उन नियमों को मानने के लिये बाध्य थी जिनके अनुसार नौसेना की एक कमाण्ड दूसरी कमाण्ड के क्षेत्र में नहीं जा सकती थी।

समुद्री डाकुओं के अतिरिक्त समुद्र की ओर से किसी और खतरे के अभाव में चिंग नौसेना का तन्त्र काफी प्रभावहीन एवं कमजोर हो गया था। समुद्र के तटों पर विशाल किलेबन्दी और उनके पुराने हथियारों सहित तथा अव्यवस्थित तरीके से नौ सेना का गठन तथा पश्चिमी शक्तियो के हलके युद्ध पोतों, उनकी चुस्ती एवं बमबारी करने की पर्याप्त योग्यता के साथ इस चीनी नौ सेना की कोई तुलना नहीं की जा सकती। अन्ततः जब चिंग शासकों ने "ठोस जहाजों एवं प्रभावकारी बन्दूकों" की आवश्यकता को महसूस किया तब तक बहुत देर हो चुकी थी और इस समय तक 19वीं सदी के मध्य में पश्चिमी देशों के हाथों वे पराजित हो चुके थे।

2.4.6 19वीं सदी के मध्य का संकट

19वीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में यह स्पष्ट हो चुका था कि चीनी साम्राज्य एक संकट का सामना कर रहा था। यह संकट था पश्चिमी शक्तियों द्वारा चीन की स्वायत्तता को चुनौती, और इसका सामना करने में चीनी-सरकार की असमर्थता। सरकार की कमजोरियों के कारण ही 1850 एवं 1860 के दशकों में किसान विद्रोहों की भी जबर्दस्त लहर आयी।

यद्यपि इस स्थिति में यह संकट परम्परागत "वंशानुगत संकट" की प्रकृति का ही अधिक था। इस तरह के संकट चीन में पहले भी कई बार आ चुके थे । इस समय के निपुण राजनीतिज्ञों का भी यह मत था कि अधिक से अधिक चिंग वंश चीन में धाराशायी हो जायेगा। परन्तु उन्होंने यह नहीं सोचा कि सदियों से चली आ रही यह सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था धाराशायी होने वाली थी । उनके इस विश्वास की उस समय पुष्टि होने लगी जिस समय 1860 तथा 1870 के दशकों में विशाल कृषक विद्रोहों का दमन करने के बाद ऐसा प्रतीत होने लगा कि चतुर राजनीतिक एवं कूटनीतिक चालों के द्वारा पश्चिमी शक्तियों के खतरे को रोकते हुए चिंग वंश की महत्त्वपूर्ण सफलता के साथ वापसी हुई। लेकिन देश के अन्दर जो नवीन शक्तियाँ उभर रही थीं उन्होंने न केवल शासक वंश की शक्ति को कमजोर किया अपितु परम्परागत व्यवस्था भी स्वयं कमजोर पड़ने लगी। ये वे शक्तियां थी जिन्होंने चीन को क्रान्तिकारी परिवर्तन की राह पर अग्रसर किया। इन शक्तियों की गतिविधियों का विवरण आगामी इकाईयों में किया जायेगा।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित में कौन सा कथन सही या गलत है? (√) एवं (x) निशान लगाइये।

   i) 17वीं सदी से 19वीं सदी तक चीन की जनसंख्या में महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई।

   ii) चिंग वंश के अधीन चीन में शक्तिशाली नौसेना का विकास हुआ।

iii) 19वीं सदी के मध्य में महान संकट के बाद चिंग वंश पुनः सत्ता में लौट आया।

iv) चीनी सरकार का आर्थिक आधार काफी मजबूत था।

2) लगभग पांच पंक्तियों में चीन के आर्थिक संकट की मुख्य विशेषताओं को समझाइये।

....

....

....

....

....

3) चीन में प्रशासनिक पतन के लिये कौन-कौन से कारण उत्तरदायी थे। लगभग 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2.5 सारांश

परम्परागत चीनी समाज की सर्वश्रेष्ठ विशेषता उसका जटिल कृषि समाज होना था। समाज में जमींदार अभिजात वर्ग का वर्चस्व था और कृषक एवं व्यापारी अन्य वर्ग थे। इस जटिल कृषि समाज के आधार पर चीन में उच्च विकसित, केन्द्रीकृत राज्य तंत्र, का सुदृढ़ आन्तरिक संगठन था तथा इसकी गतिविधियों में विविधता थी। 19वीं सदी के आते-आते चीनी साम्राज्य के पास विशाल क्षेत्र और 30 करोड़ की जनसंख्या हो चुकी थी और इसका संचालन एक प्रशासनिक तन्त्र के द्वारा किया जाता था। इस साम्राज्य ने पूर्वी एशिया में किन्हीं गम्भीर चुनौतियों का सामना नहीं किया। लेकिन इस समय में सामाजिक एवं राजनीतिक संकट के ऐसे सुनिश्चित बीजों का रोपण हो चुका था जिसने साम्राज्य को और कमजोर किया। चीनी साम्राज्य को 19वीं सदी के मध्य तथा उत्तरार्द्ध में पुनः गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा और अन्ततः इसका पतन हो गया।

2.6 शब्दावली

कन्फ्यूशियसवाद : छठी सदी ई.पू. में कन्फ्यूशियस के उपदेशों का चीन के सामाजिक जीवन एवं संगठन, दर्शन तथा वातावरण, साम्राज्यिक राज्य के चरित्र पर व्यापक प्रभाव पड़ा। कन्फ्यूशियस दर्शन का मूल सार विशेषकर राज्य के विषय में वह अवधारणा थी जिसके अनुसार सम्राट एवं अधिकारियों का शासन कानूनों की शक्ति की अपेक्षा "गुणों के आदर्शों" पर आधारित होनी चाहिए।

मांचू : चीन के सुदूर उत्तर-पूर्व में एक मंचूरिया प्रांत है जिसके निवासियों को मांचू कहा जाता था। चीन का अन्तिम शासक वंश चिंग (1644 ई. से 1911 ई. तक) मांचू थे।

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) × ii) × iii) √ iv) √

2) देखें उपभाग 2.2.2

3) देखें उपभाग 2.2.3

बोध प्रश्न 2

1) आपको अपने उत्तर में सम्राट की विभिन्न क्षमताओं जैसे सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी, विधि निर्माता तथा सेवाओं का सर्वोच्च कमाण्डर का जिक्र करना चाहिए। देखें उपभाग 2.3.1

2) आपको अपने उत्तर में नौकरशाही की भर्ती के लिये परीक्षा प्रणाली के बारे में लिखना चाहिये। देखें उपभाग 2.3.2

बोध प्रश्न 3

1) i) √ ii) × iii) √ iv) ×

2) देखें उपभाग 2.4.4

3) देखें उपभाग 2.4.3